Volume-4, Issue-8, August-2015 • ISSN No 2277 - 8160

Research Paper Journalism

सामुदायिक रेडियो और गाँवों का विकास

Dr. Subodh Kumar सहआचार्य, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग वर्धमान महावीर खुला विवि, कोटा, (राज.)

ABSTRACT

भारत जैसा विकासशील देश जहां की अधिकतर जनसंख्या कृषि प्रधान है, जो मूलरूप से गाँवो में निवास करती है, जहां की साक्षरता दर बहुत कम है। सूचना, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि की उन्नत तकनीकों के विषय में जागरूकता की कमी है। अखबारों की पहुंच का दायरा भी सीमित है। बिजली, टीवी, कंप्यूटर, इन्टरनेट जैसी सुविधाओं का अभाव है। वहां रेडियो एक सशक्त माध्यम है क्योंकि यह श्रव्य संचार करता है जिससे यह लोगों तक आसानी से सूचनाएं पहुंचा सकता है। भारत में एक समस्या भाषाओं की भी है क्योंकि यहां अनेक भाषाएं बोली जाती हैं और कहावतें तो ऐसी भी हैं कि हर ढाई कोस पर बोलियां बदल जाती हैं। ऐसे में पूरा देश छोटे-छोटे क्षेत्रों में विभाजित हो जाता है। ऐसे क्षेत्रों को संचारित करने के लिए क्षेत्रीय भाषाओं में संचार की आवश्यकता है। आज बहुत से रेडियो स्टेशन हैं जो कि क्षेत्रीय भाषाओं में हैं पर उनमें मनोरंजक कार्यक्रमों की अधिकता है, ऐसे में सूचना, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, मौसम, संस्कृति, साहित्य तथा रोजगारपरक सूचनाओं के प्रसार के लिए एक अलग रेडियो स्टेशन की आवश्यकता महसूस होती है। इस जरूरत को पूरा करने के लिए सामुदायिक रेडियो एक आसान विकल्प के तौर पर हो सकता है। प्रस्तुत शोध पत्र में सामुदायिक रेडियो के जरिए ग्रामीण विकास की संभावनाओं की समीक्षा की गई है।

KEYWORDS : सामुदायिक रेडियो, ग्रामीण क्षेत्र, विकास

भूमिका

सामुदायिक रेडियो बतौर नाम यह अपने को स्वयं ही परिभाषित करता है। समुदाय या किसी क्षेत्र विशेष का रेडियो जिसकी प्रसारण क्षमता लगभग 10 से 15 किलोमीटर की होती है। यह जागरूकतापरक सूचनाओं को प्रसारित करता है जो किसी क्षेत्र विशेष में उसी समुदाय की बोली में होती हैं। इसलिए इसे सामुदायिक रेडियो के नाम से पुकारते हैं। सामुदायिक रेडियो स्टेशन का लाइसेंस किसी समाजसेवी संस्थान, शिक्षा संस्था या कृषि विज्ञान केन्द्र के द्वारा जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से लिया जा सकता है। सामुदायिक रेडियो में एक घंटे के प्रसारण में 5 मिनट के विज्ञापन की छूट है साथ ही साथ प्रायोजित कार्यक्रमों पर प्रतिबन्ध भी है। वर्तमान में देश में लगभग 170 सामुदायिक रेडियो स्टेशन मौजूद हैं, जिसमें लगभग 150 सामुदायिक रेडियो अपनी जीवित अवस्था में हैं।

सामुदायिक रेडियो का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

सामुदायिक रेडियो के भारतीय इतिहास पर नजर डालें तो सन् 1995 में उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश पीवी सावंत के द्वारा दिए गए एक अहम फैसले में रेडियो तरंगों को सार्वजनिक सम्पत्ति बताया गया है। वाक् और अभिव्यक्ति की आजादी मानकर इसे शिक्षा और सार्वजनिक विकास के लिए प्रयोग करने की स्वतंत्रता प्रदान की गई है। इस फैसले के बाद प्राइवेट रेडियो स्टेशन और खासतौर पर सामुदायिक रेडियो की संरचना की आधारशिला रखी गई। सामुदायिक रेडियो नीति के तहत अन्ना रेडियो लाइसेन्स पाने वाला पहला कैम्पस रेडियो बना। इसे 1 फरवरी 2004 को लॉन्च किया गया। इसे अन्ना विश्वविद्यालय के शैक्षणिक और मल्टीमीडिया अनुसंधान केन्द्र ने शुरू किया जिसके सारे कार्यक्रम विवि के संचार विज्ञान के छात्रों ने तैयार किए। लगभग 12 वर्गकिलोमीटर क्षेत्र में प्रसारण के लिए 100 वॉट क्षमता के रेडियो स्टेशनों के लिए प्रारंभ में लाइसेन्स दिए गए। इसके लिए अधिकतम 30 मीटर ऊंचाई के एंटिना लगाने की अनुमति दी गई। सामुदायिक रेडियो से करीब 50 फीसदी स्थानीय मुद्दों व रूचियों के कार्यक्रम प्रसारित करने की उम्मीद की जाती है। इनमें भी जहां तक संभव हो स्थानीय भाषा- उपभाषा को तरजीह दिए जाने की आशा की जाती है। हालांकि विकासात्मक कार्यक्रमों के प्रसारण का आग्रह तो रहता है लेकिन मनोरंजनात्मक कार्यक्रमों पर भी प्रतिबंध जैसी भी कोई बात नहीं है। वैसे भारत में सामुदायिक रेडियो और व्यावसायिक एफएम रेडियो पर समाचार आधारित कार्यक्रमों के प्रसारण पर रोक है। यहां तक कि प्रत्येक घंटे में केवल 5 मिनट के विज्ञापनों की अनुमति है। प्रायोजित कार्यक्रमों को अनुमति नहीं दी जाती जब तक इन्हें केन्द्र या राज्य सरकार द्वारा प्रायोजित नहीं किया जाता है। आकाशवाणी का अपना सामुदायिक रेडियो केन्द्र है। प्रारंभ में देश के उत्तर- पूर्वी यथा नागालैंड, मिजोरम व मेघालय में जनजातीय आबादी के लिए प्रायोगिक तौर पर 5 स्थानों पर ऐसे केन्द्र खोले गए थे।

एफएम स्टेशनों की मानिन्द छोटे समूहों के लिए विकासात्मक कार्यक्रमों के सुचारू प्रसारण हेतु कई राज्यों में लाइसेन्स दिए गए जिसके उत्साहजनक परिणाम भी सामने आए। इनमें से आंध्र प्रदेश के मेढक में *संगम रेडियो*, उत्तर प्रदेश में *रेडियो बुंदेलखंड*, मध्य प्रदेश का *ध्वनिनामा* सहित तमिलनाडु में मदुराई के सामुदायिक रेडियो कार्यक्रमों से प्रेरित होकर ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों ने विकास के उल्लेखनीय काम करके इसकी सार्थकता सिद्ध की। इसके बाद तो सामुदायिक रेडियो का लाइसेन्स लेने वालों की कतार धीरे-धीरे बढ़ने लगी है। देश में वर्तमान में ऑपरेशनल सामुदायिक रेडियो की संख्या लगभग 150 है। इनमे शिक्षा, स्वयंसेवी संस्थान और कृषि विज्ञान केंद्र के सामुदायिक रेडियो शामिल हैं। हाल ही में सरकार द्वारा घोषणा की गई है कि आने वाले समय में देश में लगभग 600 नए सामुदायिक रेडियो स्टेशनों की स्थापना की जाएगी। ऐसे में देश के प्रत्येक जिले में कम से कम एक सामुदायिक रेडियो स्टेशन मौजूद हो जाएगा।

सामुदायिक रेडियो और ग्रामीण विकास

सामुदायिक रेडियो में विशेषकर जागरूकतापरक कार्यक्रमों को ही प्रसारित किया जाता है और वह भी क्षेत्रीय भाषा में। इसकी खासियत यह है, कि इसके कार्यक्रम स्थानीय लोग स्वयं बनाते हैं और स्वयं प्रसारित भी करते हैं। इससे स्थानीय समस्याओं को मंच मिल पाता है और लोगों को विषय विशेष की जानकारी आसानी से उपलब्ध हो जाती है। ग्रामीण स्तर पर कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगारपरक सूचनाओं का अभाव है। लोगों का जागरूकता स्तर कम होने से उनके सामाजिक और आर्थिक विकास में अनेक बाधाएं हैं। जागरूकता की कमी और सही मार्गदर्शन के अभाव में ग्रामीण क्षेत्रों में समग्र विकास के लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। वर्तमान में देश की सबसे बड़ी जरूरत ग्रामीण अंचलों के सही और संतुलित विकास की है ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाली भारत की लगभग 65 फीसदी जनसंख्या आज भी संचार क्रांति का हिस्सा बनने की तलाश में है।

सामुदायिक रेडियो जैसा प्रभावशाली माध्यम उनकी इस जरूरत का अहम हिस्सा बनने की पूरी क़ाबिलियत रखता है। देश के जिन-जिन क्षेत्रों में सामुदायिक रेडियो स्टेशनों की स्थापना की गई है वहां का विकास इसकी प्रभावशीलता को दर्शाता है। सामुदायिक रेडियो स्टेशनों के द्वारा हो रहा संचार स्थानीय बोली में होने की वजह से उस क्षेत्र विशेष में निवास कर रहे लोगों को आसानी से समझ में आ जाता है। विकास का पहिया कुछ मुख्य आधारों से हो कर गुजरता है जैसे यदि कोई व्यक्ति स्वस्थ हो, शिक्षित हो, उसके पास रोजगार हो और वह अपनी संस्कृति और सभ्यता को आगे बढ़ाने के लिए तत्पर हो तो वह व्यक्ति विकसित कहलाएगा। किसी भी क्षेत्र विशेष को इन पहलुओं के प्रति जागरूक बनाने में सामुदायिक रेडियो उपयोगी और महत्वपूर्ण साबित हो सकता है।

- **शिक्षा**

शिक्षा किसी भी समाज को जीवन जीने की कला सिखाने के साथ रोजगार के अवसर भी उपलब्ध कराती है। शिक्षा का मूलमंत्र किसी भी व्यक्ति को मूल रूप से जागरूक बनाना है। यदि बात ग्रामीण क्षेत्रों की करें तो वहां की साक्षरता दर बहुत कम है और इसकी उपयोगिता के प्रति भी लोगों में जागरूकता की कमी है। ऐसे में सामुदायिक रेडियो एक ऐसी प्रणाली है जो लोगों को शिक्षा के प्रति जागरूक कर सकता है। सामुदायिक रेडियो के माध्यम से लोगों को उनकी जीवन शैली में शिक्षा की मूल आवश्यकता के प्रति सचेत कर उनको स्कूलों की तरफ कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। आज जब संविधान में संशोधन कर शिक्षा के अधिकार को शामिल किया गया है और प्रारंभिक शिक्षा सभी का मूल अधिकार बन गई है ऐसे में लोगों को इस बारे में अवगत करा कर तथा उन्हें इसकी जरूरत और फायदों को बताया जा सकता है। इससे लोगों में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ेगी।

- **स्वास्थ्य**

किसी भी व्यक्ति के लिए उसका स्वास्थ्य उसके जीवन की मुख्य धरोहर है। जब बात ग्रामीण क्षेत्रों की आती है तो स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता की कमी नजर आती है। खास कर यदि बात महिलाओं के स्वास्थ्य से सम्बन्धी हो तो इस विषय में तो ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता का स्तर काफी कम है। ऐसे में सामुदायिक रेडियो के माध्यम से स्वास्थ्य के प्रति लोगों को जागरूक बनाया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर यदि बात करें कि संचार माध्यमों की कमी से ग्रामीण क्षेत्रों में सरकार द्वारा दी जा रही तमाम स्वास्थ्य सेवाओं की जानकारी का अभाव नजर आता है जिससे लोग इन सेवाओं का लाभ नहीं उठा पाते हैं। साथ ही साथ ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं में कई स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याओं को लेकर संकोच की स्थिति बनी रहती है ऐसे में यदि उन्हें रेडियो के माध्यम से जागरूक किया जाए तो वे अपने स्वास्थ्य को सही रखने के साथ ही साथ परिवार के स्वास्थ्य को भी सही करने की पहल में शामिल हो सकती हैं।

- **कृषि**

ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार का मुख्य साधन कृषि है जिस पर देश की पूरी जनसंख्या को भोजन मुहैया करने का दारोमदार है। ऐसे में यदि सभी को भरपेट भोजन उपलब्ध करवाना हो तो कृषि उत्पादों का उत्पादन तेजी से बढ़ाना होगा। कृषि जो कि जीवकोपार्जन का एक साधन थी, आज व्यवसाय का रूप धारण करती जा रही है। इसमें आज नई-नई तकनीकों के प्रयोग का चलन बढ़ रहा है। चाहे वह बीज हों, उर्वरक या फिर उपकरण सभी आधुनिकता और तकनीकी रूप से विकसित हुए हैं। हालांकि हरित क्रांति के बाद उत्पादन बढ़ा है, पर यदि सामुदायिक रेडियो के माध्यम से इसे बढ़ाने के लिये विशेष कार्यक्रमों को प्रसारित किया जाए तो उत्पादन और अधिक बढ़ाया जा सकता है। हमारे देश में अधिकतर किसान दो फसली उपज लेते हैं। यदि सामुदायिक रेडियो के माध्यम से उन्हें बहुफसली उपज के बारे में विस्तार से समझाया जाए तो वे अपने खेतों को और अधिक उपयोगी बना सकते हैं। ऐसे कार्यक्रमों से कृषि में बहुआयामी उपजों को बढ़ावा देकर ग्रामीणों की आमदनी को बढ़ाया जा सकता है। ग्रामीणों को रोजगारपरक बनाने के लिये कृषि के साथ-साथ मधुमक्खी पालन, मुर्गी पालन, मछली पालन जैसे अनेक कार्यक्रमों के प्रति जागरूक बना कर उनकी अतिरिक्त आय को बढ़ाया जा सकता है।

- **रोजगार**

रोजगार किसी भी व्यक्ति के भरण पोषण के लिए मुख्य धुरी है। ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी की समस्या एक बड़ी समस्या के तौर पर है। एक तरफ जहां रोजगार के अवसर सीमित हैं वहीं दूसरी ओर उपलब्ध रोजगार के प्रति जागरूकता की कमी है। ऐसे में सामुदायिक रेडियो के माध्यम से रोजगार के अवसरों के बारे में जानकारी देकर लोगों को रोजगारपरक बनाया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर यदि ग्रामीणों को सरकार द्वारा लघु और कुटीर उद्योगों के विकास के लिए दी जा रही मदद के बारे में विस्तार से जानकारी मुहैया करा दी जाए तो वह इस तरह के कार्य को करके अपनी बेरोजगारी को कम कर सकते हैं। सामुदायिक रेडियो के द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रमों से कृषि में बहुआयामी उपजों के बारे में जानकारी देकर ग्रामीणों की आमदनी को बढ़ाया जा सकता है।

- **सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य**

संस्कृति और साहित्य किसी भी क्षेत्र विशेष को उसकी अलग पहचान दिलाता है। नई पीढ़ी को समाज की संस्कृति और साहित्य से जोड़े रखने के लिए उनको इसके बारे जागरूक करना अवश्यक है ऐसे में सामुदायिक रेडियो के माध्यम से लोक कथाओं, लोक गायनों और संस्कृति विशेष पर आधारिक कार्यक्रमों के माध्यम

जागरूक बनाने के साथ ही साथ क्षेत्र विशेष की सांस्कृतिक और साहित्यिक धरोहर को आगे की पीढ़ी तक पहुंचाया जा सकता है| इन तमाम मुद्दों पर जागरूकता फैलाने में सामुदायिक रेडियो ग्रामीण अंचलों में एक विशेष उपकरण के तौर पर नजर आता है|

निष्कर्ष

ग्रामीण स्तर पर सामुदायिक रेडियो कृषि, रोजगार, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे मुद्दों पर जागरूकता फैलाकर गांवों के सर्वांगीण विकास में संयोजक की भूमिका निभा सकता है। यही कारण है कि सामुदायिक रेडियो जैसे तंत्र की ग्रामीण विकास में महती आवश्यकता नजर आ रही है| वर्तमान समय में यदि ग्रामीण क्षेत्रों को विकास की मुख्य धारा से जोड़ना है तो सामुदायिक रेडियो स्टेशनों के व्यापक विकास की ओर अग्रसर होना पड़ेगा| क्षेत्रीय भाषाओं में जानकारी की उपलब्धता का सबसे सरल और सस्ता माध्यम सिर्फ और सिर्फ सामुदायिक रेडियो ही हो सकता है| इसी आवश्यकता और प्रभावशीलता को ध्यान में रखते हुए **केंद्र सरकार** ने देश में लगभग **600** नए सामुदायिक रेडियो स्टेशन खोलने की घोषणा की है| आने वाले समय में ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना के प्रवाह को गति देने के लिए और साथ ही साथ जनहित के मुद्दों को प्रमुखता से उभारने के लिए सामुदायिक रेडियो एक प्रभावशाली मंच की भांति कार्य कर सकता है|

REFERENCES

पुस्तकें | 1. डॉ., भानावत, संजीव (2009). इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, माथुर, श्याम (Eds.), सामुदायिक रेडियो. जयपुर : हिन्दी ग्रन्थ अकादमी| (P.P.- 94.98). | 2. डॉ., भानावत, संजीव (2009). इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, नन्दा, वर्तिका (Eds.), नये जमाने का मीडिया: सामुदायिक रेडियो. जयपुर : हिन्दी ग्रन्थ अकादमी|(P.P.- 99.102). | 3. कठेरिया, धरवेश, डॉ., सिंह, महावीर (2013). रेडियो माध्यम और तकनीक. दिल्ली : शिल्पायन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स| | 4. शर्मा, कौशल (2004). रेडियो प्रसारण. नई दिल्ली : प्रतिभा प्रतिष्ठान| | 5. वर्मा, चन्द, केशव, (1990). शब्द की साख (भारत में रेडियो प्रसारण). इलाहाबाद : प्रदीपन प्रकाशन| | 6. डॉ., कुमार, सिद्धनाथ, (1992). रेडियो नाटक की कला. नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड| | शोध पत्र | 1. Khan, Saadullah. (2010). Role of Community Radio in Rural Development. Communication Today,12,87-93. | 2. Dr., Pawar, Nisha.(2013). Women's Community Radio for poverty reduction. Communication Today,15,134-143. | 3. Sharma, Arpita & Sharma, Adita. (2011). Community Radio: Information tool in fisheries. Communication Today,13,79-88. | 4. Aleaz, Bonita.(2010). Community Radio and Empowerment. Economic & Political Weekly,16, 29-32. | 5. Fraser, colin. & Estrada, Sonia.(2002). Community Radio for change & Development. Local/Global Encounters, 45,69-73. | वेबसाइट्स | 1. https://en.wikipedia.org/wiki/Community_radio. (02/05/2015 . 04:50 PM) | 2. http://people.stfx.ca/x2011/x2011ubn/CFXU%20Research/community%20radi.pdf\. (05/05/2015 . 09:20 AM) | 3. http://www.amarc.org/documents/articles/Community_Radio_Global.pdf. (05/05/2015 . 10:40 AM) | 4. http://ncra.ca/whv/ncra-report-women-in-community-radio.pdf. (09/05/2015 . 01:35 PM) | 5. http://eprints.qut.edu.au/7178/1/7178.pdf?origin=publication_detail. (12/05/2015 . 08:04 PM) |